दुर्गापुर शिल्पांचल

राजभाषा विभाग, मंडल कार्यालय दुर्गापुर

अप्रैल-सितंबर 2025, छमाही हिंदी गृह पत्रिका

पंजाब नैशनल बैंक
...भरोसे का प्रतीक !

punjab national bank
...the name you can BANK upon !

pnb
एनएलएम
(राष्ट्रीय पशुधन मिशन)
समृद्ध भविष्य के लिए
पशुधन उद्यमिता
को सशक्त बनाना
अनुदान
50% पूंजी अनुदान इन इकाइयों की स्थापना पर पाएं
बेहतर पशुधन
उच्च गुणवत्ता वाली नस्लों के उन्नयन पर विशेष ध्यान
चारा विकास
आहार गुणवत्तापूर्ण आहार एवं चारे की उपलब्धता सुनिश्चित करना
हमें फॉलो करें : www.pnbindia.in | टोल फ्री नम्बर 1800-1800 & 1800-2021 | 1800 180 8888 पर मिस्ड कॉल दें
पंजाब नैशनल बैंक
...भरोसे का प्रतीक !
punjab national bank
...the name you can BANK upon !

दुर्गापुर शिल्पांचल

सम्पादकीय मंडल

मुख्य संरक्षक

श्री दीपक आचार्य
उप महाप्रबंधक मंडल प्रमुख

संरक्षक

श्री गोपाल कृष्ण
उप मंडल प्रमुख

विशेष सहयोग

अरविन्द कुमार
मुख्य प्रबंधक

संपादक

आनंद बिहारी साव
वरिष्ठ प्रबंधक राजभाषा
सम्पर्क सूत्र - 8527199826

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ संख्या
मुख्य संरक्षक का संदेश	2
उप मंडल प्रमुख का संदेश	3
सम्पादकीय	4
कृत्रिम बुद्धिमत्ता एवं भारतीय बैंकिंग परिदृश्य	5-8
दामोदर नदी	9
जाने भी दो यारो	10
सफर	10
सतर्कता	11
आत्ममंथन	12
नारी शक्ति	12
बेटिया	12
फ़ौजी की चिठ्ठी	13-14
बचपन	15
वर्षा आई छम–छम-छम	15
खुबसुरत सफर	16
माँ	16
मंडल कार्यालय की गतिविधियां	17-18

पंजाब नैशनल बैंक, मंडल कार्यालय दुर्गापुर, गैलेरिया मार्केट बेनाचट्टी, दुर्गापुर – 713213

“दुर्गापुर शिल्पांचल” में रचनाकारों द्वारा व्यक्त राय एवं विचार व्यक्तिगत है । मंडल कार्यालय का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है । यह पत्रिका केवल आंतरिक परिचालन हेतु प्रकाशित किया गया है ।

मुख्य संरक्षक का संदेश

प्रिय साथियों,

दुर्गापुर मंडल की छमाही पात्रिका "दुर्गापुर शिल्पांचल" के प्रथम अंक के माध्यम से आप सभी सुधी पाठको से संवाद करते हुए मुझे अति प्रसन्नता हो रही है। सर्वप्रथम राजभाषा स्वर्ण जयंती और हिंदी दिवस के अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक बधाई। आज के युग में भाषा सिर्फ संचार का माध्यम नहीं बल्कि समाज की आत्मा के रूप में स्थापित हो चुकी है । यह न केवल विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम है, बल्कि संस्कृति, परंपरा, इतिहास और पहचान की संवाहिका भी है। जब कोई भाषा बोलता है, तो वह केवल शब्दों को नहीं, बल्कि एक पूरी सभ्यता को जीवंत करता है ।

भाषा का संरक्षण केवल भाषाविदों या साहित्यकारों की जिम्मेदारी नहीं, यह प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है । हमें अपने घरों में, स्कूलों में, संस्थानों में मातृभाषा का सम्मान करना होगा । सरकार को भी शिक्षा नीति, मीडिया, प्रशासन और तकनीकी क्षेत्र में भारतीय भाषाओं को प्राथमिकता देनी चाहिए । तकनीक के इस युग में भाषा संरक्षण के नए रास्ते खुल रहे हैं । सोशल मीडिया, ब्लॉग, पॉडकास्ट, ई-बुक्स जैसे माध्यमों का प्रयोग स्थानीय और मातृभाषाओं में सामग्री बनाने हेतु किया जाना चाहिए । भाषा को केवल उपयोग की वस्तु न मानकर उसकी गरिमा को पहचानना होगा । यह हमारी जड़ों से जुड़ाव का माध्यम है । यदि हमें अपनी पहचान, संस्कृति और आत्मा को जीवित रखना है, तो अपनी भाषा को अपनाना और संवारना अनिवार्य है । भाषा का सम्मान, स्वयं का सम्मान है ।

मै, बैंक द्वारा 131वे स्थापना दिवस पर विभिन्न बचत खातों को माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी द्वारा नये अवसरों के माध्यम से ग्राहक केन्द्रित विभिन्न जमा योजनाए डिजिटल नवाचार के साथ वितीय समावेशन को बढावा देने हेतु एक नयी पहल जारी किया गया है । डिजिटल बैंकिंग को सुरक्षित, त्वरित और सुविधाजनक बनाते हुए इसे ग्राहक लक्षित योजनाये पेश की गयी है । पंजाब नैशनल बैंक ग्राहक प्रथम ,डिजिटल समर्थ और सामाजिक रूप से उत्तरदायी बैंक के रूप में उभर कर तभी सामने आ सकती है जब हम सभी एक टीम भावना से कार्य करते हेतु प्रतिबद्ध होंगे । सभी कर्मचारी अप्रवासी भारतीयों के एनआरआई एवं एनआरओ खाता खोलने हेतु सार्थक प्रयास क्र बैंक की जमाराशि वृद्धि में अपना सहयोग करे । मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि दुर्गापुर पीएनबी परिवार का प्रत्येक स्टाफ देश की अर्थव्यस्था को मजबूती प्रदान करने में अपनी अहम भूमिका निभाएगे ।

शुभकामनाओं सहित ।

श्री दीपक आचार्य
मंडल प्रमुख

उप मंडल प्रमुख का संदेश

समाज निरंतर परिवर्तनशील है। समय के साथ हमारी सोच, व्यवहार, जीवनशैली और मूल्यों में बदलाव आना स्वाभाविक है। किंतु यह परिवर्तन सकारात्मक दिशा में हो, यह सुनिश्चित करना हम सभी की जिम्मेदारी है । वर्तमान समय में तकनीकी प्रगति, वैश्वीकरण और सोशल मीडिया ने समाज की दिशा और दशा को बहुत तेजी से प्रभावित किया है । इन सबके बीच, एक जागरूक नागरिक होने के नाते हमारा कर्तव्य है कि हम इन परिवर्तनों को समझें, विश्लेषण करें और एक बेहतर समाज के निर्माण में योगदान दें ।

आज के दौर में हम जहां एक ओर वैज्ञानिक प्रगति और आधुनिकता की ओर अग्रसर हो रहे हैं, वहीं दूसरी ओर सामाजिक मूल्य और मानवीय संवेदनाएं धीरे-धीरे क्षीण होती जा रही हैं । परिवारों में संवाद की कमी, युवाओं में नैतिकता का अभाव, और सामाजिक उत्तरदायित्व से मुंह मोड़ना गंभीर चिंता के विषय हैं। बच्चों का अपने बड़ों के प्रति सम्मान में कमी, और बड़ों का भी युवाओं की बातों को नजरअंदाज करना, दोनों पीढ़ियों के बीच दूरी बढ़ा रहा है ।

इसके अलावा, सोशल मीडिया का अत्यधिक प्रभाव भी समाज में सतही सोच और तात्कालिक प्रतिक्रियाओं को बढ़ावा दे रहा है । आज किसी भी मुद्दे पर गहराई से सोचने की बजाय त्वरित निर्णय लिए जाते हैं, जिनका दीर्घकालिक प्रभाव गंभीर हो सकता है । ऐसे में जरूरी है कि हम विचारशीलता, सहिष्णुता और संवाद की संस्कृति को बढ़ावा दें ।

शिक्षा प्रणाली में भी बदलाव की आवश्यकता है । आज का समय केवल किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि व्यवहारिक ज्ञान, नैतिक शिक्षा और संवेदनशीलता को भी पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाना चाहिए । विद्यालयों और महाविद्यालयों को ऐसी शिक्षा देनी चाहिए जो छात्रों को केवल नौकरी के लिए नहीं, बल्कि एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए तैयार करे ।

समाज में हो रहे परिवर्तनों के प्रति आंख मूंद लेना समाधान नहीं है । हमें यह स्वीकार करना होगा कि हर परिवर्तन अपने साथ अवसर और चुनौतियां दोनों लेकर आता है । यदि हम सजग, संवेदनशील और जागरूक बनें, तो हम इन परिवर्तनों को समाज के लिए वरदान बना सकते हैं ।

अंततः एक सशक्त और नैतिक समाज का निर्माण केवल सरकार या किसी संस्था की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि यह हम सभी का सामूहिक दायित्व है । हमें चाहिए कि हम अपने विचारों, कर्मों और व्यवहार से एक ऐसा वातावरण बनाएं, जिसमें हर व्यक्ति सुरक्षित, सम्मानित और प्रगतिशील महसूस करे । यही सच्चे अर्थों में सामाजिक विकास होगा ।

शुभकामनाओं सहित ।

गोपाल कृष्ण
उप मंडल प्रमुख

सम्पादकीय

भारत विविधताओं का देश है, जहाँ सैकड़ों भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं । इतनी भाषाई विविधता के बावजूद, एक ऐसी भाषा की आवश्यकता हमेशा से महसूस की जाती रही है, जो पूरे देश को आपस में जोड़ सके, संवाद का सशक्त माध्यम बन सके और प्रशासनिक व सामाजिक स्तर पर समानता का सूत्र बन जाए। यही भूमिका निभाने के लिए हिंदी को संविधान द्वारा 14 सितम्बर 1949 को राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया । तभी से हर वर्ष 14 सितम्बर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है, जो हमें हमारी राजभाषा के महत्व और दायित्व की याद दिलाता है ।

हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक अस्मिता, भावनात्मक एकता और राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति है । यह वह भाषा है जिसमें भारत की आत्मा बसती है, और जो जन-जन के मन की बात को सरलता से अभिव्यक्त करने में सक्षम है। भारत जैसे विशाल लोकतंत्र में,जहाँ विभिन्न प्रांतों की भाषाएँ अलग-अलग हैं, वहाँ हिंदी एक पुल का कार्य करती है जो उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम को जोड़ती है ।

राजभाषा के रूप में हिंदी की भूमिका केवल प्रतीकात्मक नहीं होनी चाहिए, बल्कि इसे व्यवहारिक और प्रशासनिक कार्यों में भी प्राथमिकता मिलनी चाहिए। यह देखा गया है कि कई सरकारी कार्यालयों और संस्थानों में आज भी अंग्रेज़ी को अधिक प्रयोग किया जा रहा है, जबकि संविधान के अनुच्छेद 343 से 351 तक हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के स्पष्ट प्रावधान हैं। आवश्यकता इस बात की है कि हम केवल औपचारिकता के लिए हिंदी को न अपनाएं, बल्कि इसे अपने दैनिक कार्यों में अपनाकर इसकी शक्ति और उपयोगिता को स्थापित करें । हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए तकनीकी माध्यमों का सहयोग लेना समय की मांग है । आज के डिजिटल युग में सोशल मीडिया, मोबाइल एप्स, और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) जैसे साधनों में हिंदी की उपस्थिति और उपयोग को बढ़ाना बेहद जरूरी है । इसके साथ ही, स्कूलों और विश्वविद्यालयों में हिंदी को केवल एक विषय के रूप में नहीं, बल्कि विचार और अभिव्यक्ति की भाषा के रूप में प्रस्तुत किया जाना चाहिए ।

राजभाषा हिंदी को सशक्त बनाने का कार्य केवल सरकार या किसी संस्था की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि यह प्रत्येक नागरिक का दायित्व है । हमें गर्व के साथ हिंदी का प्रयोग करना चाहिए, न कि हीन भावना से । जब तक हम स्वयं अपनी भाषा का सम्मान नहीं करेंगे, तब तक विश्व स्तर पर भी इसे वह स्थान नहीं मिल सकेगा जिसकी वह अधिकारी है ।

हिंदी केवल राजभाषा नहीं, बल्कि राष्ट्रभाषा बनने की पूर्ण सामर्थ्य रखती है । इसके लिए हमें इसके प्रयोग को बढ़ावा देना होगा, इसके वैज्ञानिक, प्रशासनिक और तकनीकी स्वरूप को मजबूत करना होगा, और साथ ही अपनी मानसिकता में भी सकारात्मक बदलाव लाना होगा । हिंदी को यदि हम सब मिलकर अपनाएं, तो यह निश्चित ही भारत को एक सशक्त, समरस और एकीकृत राष्ट्र के रूप में आगे ले जाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है ।

आनंद बिहारी साव

कृत्रिम बुद्धिमत्ता एवं भारतीय बैंकिंग परिदृश्य

कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधुनिक युग की सबसे परिवर्तनकारी तकनीकों में से एक है । यह तकनीक न केवल विज्ञान और उद्योग को नया आयाम दे रही है, बल्कि वित्तीय क्षेत्र में भी क्रांतिकारी बदलाव ला रही है । भारत जो अपनी विशाल जनसंख्या और तेजी से बढ़ती डिजिटल अर्थव्यवस्था के लिए जाना जाता है, बैंकिंग क्षेत्र में "एआई" को अपनाने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है । भारतीय बैंकिंग का इतिहास जो कभी कागजी लेनदेन और लंबी कतारों से परिभाषित था, अब डिजिटल नवाचारों की ओर बढ़ रहा है । आने वाले दशकों में "एआई" भारतीय बैंकिंग परिदृश्य को पूरी तरह से बदल सकती है, जिससे यह अधिक कुशल समावेशी और ग्राहक-केंद्रित बन सके ।

वर्तमान परिदृश्य में "एआई" की भूमिका

भारतीय बैंकिंग क्षेत्र में "एआई" का उपयोग पहले से ही शुरू हो चुका है और इसके प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे हैं । सबसे प्रमुख उदाहरण है ग्राहक सेवा में "एआई" का प्रयोग । पंजाब नेशनल बैंक का "पिहू" चैटबॉट एक "एआई"-संचालित बैंकिंग सहायक है जो बैंकिंग सेवाओं और सूचनाओं तक निर्बाध पहुंच प्रदान करता है । स्टेट बैंक ऑफ इंडिया ने अपने "एआई"-संचालित चैटबॉट "सिया" को पेश किया जो ग्राहकों को खाता की जानकारी, लोन आवेदन का प्रेषण और बिल भुगतान जैसी सेवाएँ प्रदान करता है । इसी तरह एचडीएफसी बैंक का "ईवा"और आईसीआईसीआई बैंक का "आईपाल" भी ग्राहकों के लिए 24/7 सहायता उपलब्ध कराते हैं।ये चैटबॉट प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण का उपयोग करके हिंदी अंग्रेजी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में संवाद कर सकते हैं, जो भारत जैसे बहुभाषी देश के लिए बेहद महत्वपूर्ण है । धोखाधड़ी का पता लगाना और साइबर सुरक्षा एक और क्षेत्र है जहाँ "एआई" ने अपनी उपयोगिता सिद्ध की है । भारतीय रिज़र्व बैंक (आरबीआई) और निजी बैंक मशीन लर्निंग एल्गोरिदम का उपयोग करके असामान्य लेनदेन पैटर्न की पहचान करते हैं । उदाहरण के लिए, यदि कोई खाते से असामान्य समय पर बड़ी राशि निकाली जाती है, तो "एआई" तुरंत अलर्ट जारी कर सकती है । इससे न केवल वित्तीय अपराध कम हो रहे हैं, बल्कि ग्राहकों का भरोसा भी बढ़ रहा है ।

ऋण स्वीकृति प्रक्रिया में भी "एआई" ने क्रांति ला दी है । पहले जहाँ क्रेडिट स्कोर और आय प्रमाण जैसे पारंपरिक मापदंडों पर निर्भरता थी वहीं अब "एआई" वैकल्पिक डेटा जैसे मोबाइल उपयोग पैटर्न सोशल मीडिया गतिविधि और ऑनलाइन खरीदारी के इतिहास का विश्लेषण करके ऋण योग्यता का आकलन करती है । इससे विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों और छोटे व्यवसायियों को लाभ हुआ है जो पहले औपचारिक बैंकिंग प्रणाली से बाहर थे । "एआई" का वर्तमान उपयोग सिर्फ बड़े बैंकों तक सीमित नहीं है । क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक ("आरआरबी") और सहकारी बैंक भी धीरे-धीरे इसे अपना रहे हैं । उदाहरण के लिए, कुछ "आरआरबी" ने "एआई" आधारित क्रेडिट स्कोरिंग मॉडल्स को लागू किया है जिससे किसानों को छोटे ऋण आसानी से मिल रहे हैं । यह बदलाव भारत के कृषि-प्रधान क्षेत्रों में वित्तीय समावेशन को बढ़ावा दे रहा है । इसके अलावा, "यूपीआई" जैसे प्लेटफॉर्म्स ने "एआई" को अपने कोर में एकीकृत किया है जिससे लेनदेन की गति और सुरक्षा में सुधार हुआ है । एनपीसीआई (भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम) के आँकड़ों के अनुसार "यूपीआई" लेनदेन की मात्रा 2025 तक और भी बढ़ने की उम्मीद है और "एआई" इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी ।

ग्राहकों और बैंक कर्मचारियों के दृष्टिकोण से "एआई" का प्रभाव

कृत्रिम बुद्धिमत्ता "एआई" का प्रभाव केवल तकनीकी और परिचालन स्तर तक सीमित नहीं है यह ग्राहकों और बैंक कर्मचारियों के जीवन को भी गहराई से प्रभावित कर रहा है । इन दोनों पक्षों के दृष्टिकोण को समझना यह जानने के लिए जरूरी है कि "एआई" भारतीय बैंकिंग के भविष्य को कैसे आकार देगी ।

ग्राहकों का दृष्टिकोण

ग्राहकों के लिए "एआई" ने बैंकिंग को पहले से कहीं अधिक सुविधाजनक और व्यक्तिगत बना दिया है।उदाहरण के लिए "एआई" संचालित चैटबॉट्स और मोबाइल ऐप्स के जरिए ग्राहक अपनी जरूरतों के अनुसार त्वरित सहायता प्राप्त कर सकते हैं । एक शहरी ग्राहक जो व्यस्त जीवनशैली में समय की कमी से जूझता है, अब शाखा में जाए बिना अपने खाते की जाँच कर सकता है या ऋण के लिए आवेदन कर सकता है । वहीं ग्रामीण क्षेत्रों के ग्राहक जो पहले बैंकिंग सेवाओं से दूर थे अब मोबाइल आधारित "एआई" टूल्स के माध्यम से वित्तीय प्रणाली से जुड़ रहे हैं । हालांकि सभी ग्राहक "एआई" के प्रति एकसमान रूप से उत्साहित नहीं हैं । कुछ लोगों को डेटा गोपनीयता को लेकर चिंता है । वे सोचते हैं कि उनकी व्यक्तिगत जानकारी का उपयोग उनके खिलाफ या अनुचित तरीके से किया जा सकता

है । उदाहरण के लिए, यदि कोई "एआई" टूल ग्राहक के खर्च करने की आदतों का विश्लेषण करके उन्हें बार-बार लोन ऑफर भेजता है तो यह कुछ लोगों को परेशान कर सकता है । इसके अलावा, तकनीक से अपरिचित बुजुर्ग ग्राहकों को "एआई" आधारित सेवाओं का उपयोग करने में कठिनाई हो सकती है । उनकी नजर में पारंपरिक बैंकिंग में मानवीय संपर्क का एक विश्वास और आत्मीयता थी जो "एआई" में गायब हो सकती है । फिर भी जैसे - जैसे डिजिटल साक्षरता बढ़ रही है ग्राहकों का "एआई" के प्रति रुझान सकारात्मक होता जा रहा है । विशेष रूप से युवा पीढ़ी जो तकनीक के साथ सहज है "एआई" को एक वरदान मानती है । उनके लिए यह समय बचाने वाला और जीवन को आसान बनाने वाला उपकरण है । भविष्य में यदि बैंक ग्राहकों को "एआई" के लाभों के बारे में शिक्षित करें और उनकी गोपनीयता की रक्षा के लिए पारदर्शी नीतियाँ अपनाएँ तो स्वीकार्यता और बढ़ेगी ।

बैंक कर्मचारियों का दृष्टिकोण

बैंक कर्मचारियों के लिए "एआई" एक दोधारी तलवार की तरह है । एक ओर यह दोहराव वाले कार्यों जैसे डेटा एंट्री खाता सत्यापन और ग्राहक पूछताछ को स्वचालित करके उनके काम को आसान बनाती है । उदाहरण के लिए एक शाखा कर्मचारी जो पहले दिन भर में सैकड़ों फॉर्म की जाँच करता था । अब "एआई" के सहयोग से अधिक रचनात्मक और रणनीतिक कार्यों जैसे ग्राहक सलाह या निवेश योजना पर ध्यान दे सकता है । दूसरी ओर कुछ कर्मचारी "एआई" को अपनी नौकरी के लिए खतरे के रूप में देखते हैं । स्वचालन के बढ़ते उपयोग से यह डर पैदा हुआ है कि मशीनें उनकी जगह ले सकती हैं । विशेष रूप से निचले स्तर के कर्मचारी जैसे क्लर्क या कैशियर इस चिंता से ग्रस्त हैं । हालांकि वास्तविकता यह है कि "एआई" पूरी तरह से मानव कर्मचारियों की जगह नहीं ले सकती । यह उनके सहायक के रूप में कार्य करती है जिससे उनकी उत्पादकता बढ़ती है । उदाहरण के लिए धोखाधड़ी का पता लगाने में "एआई" अलर्ट तो जारी कर सकती है लेकिन उसका समाधान करने के लिए मानवीय निर्णय और अनुभव की जरूरत होती है । भविष्य में कर्मचारियों के लिए "एआई" के साथ तालमेल बिठाना जरूरी होगा । इसके लिए बैंकों को बड़े पैमाने पर पुनः कौशल विकास और अपस्किलिंग कार्यक्रम चलाने होंगे । कर्मचारियों को "एआई" टूल्स के उपयोग डेटा विश्लेषण और ग्राहक संबंध प्रबंधन में प्रशिक्षित करना होगा । जो बैंक इस दिशा में निवेश करेंगे वे न केवल अपने कर्मचारियों का मनोबल बढ़ाएँगे बल्कि अधिक कुशल कार्यबल भी तैयार करेंगे ।

भावी भारतीय बैंकिंग में "एआई" की संभावनाएँ

भविष्य में "एआई" का प्रभाव और भी गहरा होगा । डिजिटल पेमेंट सिस्टम जो पहले से ही भारत में "यूपीआई" ("यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस") के रूप में लोकप्रिय हैं "एआई" के एकीकरण से और बेहतर होंगे । "एआई" भविष्यवाणी विश्लेषण का उपयोग करके ग्राहकों की खर्च करने की आदतों का अनुमान लगा सकती है और उन्हें व्यक्तिगत ऑफर प्रदान कर सकती है । उदाहरण के लिए यदि कोई ग्राहक नियमित रूप से यात्रा के लिए भुगतान करता है तो "एआई" उसे यात्रा बीमा या छूट वाले टिकट की पेशकश कर सकती है । यह न केवल ग्राहक अनुभव को बेहतर बनाएगा बल्कि बैंकों के लिए अतिरिक्त राजस्व का स्रोत भी बनेगा । ब्लॉकचेन और "एआई" का संयोजन भी भविष्य की एक बड़ी संभावना है । ब्लॉकचेन लेनदेन में पारदर्शिता और सुरक्षा लाती है जबकि "एआई" डेटा विश्लेषण और स्वचालन में मदद करती है । यह संयोजन स्मार्ट कॉन्ट्रैक्ट्स को संभव बना सकता है जहाँ ऋण समझौते या बीमा दावे स्वचालित रूप से पूरे हो सकें । इससे मैनुअल हस्तक्षेप की आवश्यकता कम होगी और प्रक्रिया तेज होगी । ग्रामीण क्षेत्रों में वित्तीय समावेशन "एआई" के सबसे बड़े योगदानों में से एक हो सकता है । भारत में अभी भी लाखों लोग औपचारिक बैंकिंग से बाहर हैं । "एआई"- संचालित मोबाइल एप्लिकेशन और कियोस्क ग्रामीण आबादी को बैंकिंग सेवाएँ प्रदान कर सकते हैं । उदाहरण के लिए, आवाज आधारित "एआई" असिस्टेंट्स जो स्थानीय भाषाओं में काम करते हों अनपढ़ या कम शिक्षित लोगों को भी खाता खोलने लेनदेन करने और ऋण के लिए आवेदन करने में मदद कर सकते हैं । व्यक्तिगत वित्त प्रबंधन एक और क्षेत्र है जहाँ "एआई" क्रांति ला सकती है । भविष्य में हर ग्राहक के पास एक "एआई" संचालित वित्तीय सलाहकार हो सकता है जो उनकी आय खर्च और निवेश लक्ष्यों के आधार पर सुझाव दे । यह न केवल वित्तीय साक्षरता को बढ़ाएगा बल्कि लोगों को अपनी बचत को बेहतर ढंग से प्रबंधित करने में भी मदद करेगा । भविष्य में "एआई" का उपयोग सिर्फ लेनदेन तक सीमित नहीं रहेगा । यह बैंकिंग को एक समग्र सेवा में बदल सकता है। उदाहरण के लिए "एआई"-संचालित "स्मार्ट वॉलेट्स" ग्राहकों को उनकी वित्तीय सेहत का रीयल टाइम विश्लेषण प्रदान कर सकते हैं । ये वॉलेट्स न केवल खर्च को ट्रैक करेंगे बल्कि बचत के लिए सुझाव देंगे और निवेश के अवसरों की सिफारिश करेंगे ।

इसके अलावा "एआई" और आईओटी (इंटरनेट ऑफ़ थिंग्स) का संयोजन भविष्य में "स्मार्ट एटीएम" को जन्म दे सकता है जो ग्राहकों की जरूरतों को पहले से भाँपकर नकदी निकासी या अन्य सेवाएँ प्रदान करेंगे। ग्रामीण क्षेत्रों में "एआई" ड्रोन आधारित बैंकिंग सेवाओं को संभव बना सकती है। ये ड्रोन दूरदराज के गाँवों में नकदी वितरण दस्तावेज संग्रह और डिजिटल कियोस्क की स्थापना कर सकते हैं। यह विचार अभी प्रारंभिक अवस्था में है लेकिन तकनीकी प्रगति के साथ यह वास्तविकता बन सकता है।

सरकारी नीतियाँ और नियामक ढांचा

कृत्रिम बुद्धिमत्ता ("एआई") को भारतीय बैंकिंग परिदृश्य में सफलतापूर्वक लागू करने के लिए सरकार और नियामक संस्थानों की भूमिका महत्वपूर्ण है। भारतीय रिज़र्व बैंक (आरबीआई) ने पहले ही डिजिटल बैंकिंग और तकनीकी नवाचारों को बढ़ावा देने के लिए कई कदम उठाए हैं। उदाहरण के लिए आरबीआई ने 2019 में "फिनटेक के लिए सक्षम ढांचा" शुरू किया जो बैंकों और स्टार्टअप्स को "एआई" आधारित समाधानों का परीक्षण करने की अनुमति देता है। यह ढांचा यह सुनिश्चित करता है कि नवाचार सुरक्षित और नियंत्रित वातावरण में हों जिससे ग्राहकों के हितों की रक्षा हो। डिजिटल इंडिया पहल भी "एआई" के प्रसार में एक बड़ा योगदान दे रही है। इस कार्यक्रम के तहत ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट कनेक्टिविटी और डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा दिया जा रहा है जो "एआई"-संचालित बैंकिंग सेवाओं के लिए आधार तैयार कर रहा है। सरकार ने 2021 में "राष्ट्रीय कृत्रिम बुद्धिमत्ता रणनीति" भी प्रस्तुत की जिसमें वित्तीय सेवाओं को एक प्रमुख क्षेत्र के रूप में चिह्नित किया गया। इस रणनीति का लक्ष्य भारत को "एआई" के क्षेत्र में वैश्विक नेता बनाना है और इसमें बैंकों के लिए तकनीकी प्रशिक्षण और अनुसंधान को बढ़ावा देना शामिल है। हालांकि डेटा गोपनीयता और साइबर सुरक्षा के लिए अभी और सख्त नीतियों की आवश्यकता है। भारत का व्यक्तिगत डेटा संरक्षण विधेयक अभी भी लागू होने की प्रतीक्षा में है। यह विधेयक "एआई" के उपयोग को विनियमित करने और ग्राहक डेटा के दुरुपयोग को रोकने में मदद कर सकता है। इसके अलावा आरबीआई को "एआई" एल्गोरिदम की पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए दिशानिर्देश जारी करने चाहिए ताकि पक्षपात या गलत निर्णयों से बचा जा सके।

केस स्टडी और उदाहरण

भारतीय बैंकिंग क्षेत्र में "एआई" के वास्तविक प्रभाव को समझने के लिए कुछ प्रमुख उदाहरणों पर नजर डालना जरूरी है। स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (एसबीआई) जो देश का सबसे बड़ा सार्वजनिक बैंक है "एआई" का उपयोग करके अपनी सेवाओं को बदल रहा है। इसका "योनो" (यू ओनली नीड वन) प्लेटफॉर्म एक "एआई"-संचालित डिजिटल बैंकिंग ऐप है जो ग्राहकों को खाता प्रबंधन निवेश सलाह और ऋण आवेदन जैसी सुविधाएँ प्रदान करता है। योनो ने लाखों ग्राहकों को डिजिटल बैंकिंग से जोड़ा है और ग्रामीण क्षेत्रों में भी इसकी पहुँच बढ़ रही है। एचडीएफसी बैंकों ने भी "एआई" को अपनाने में अग्रणी भूमिका निभाई है। इसका "पेज़ैप" ऐप "एआई" का उपयोग करके ग्राहकों के लिए व्यक्तिगत पेमेंट ऑफर तैयार करता है। इसके अलावा, बैंक ने धोखाधड़ी का पता लगाने के लिए "एआई" मॉडल्स को एकीकृत किया है जिससे इसके प्लेटफॉर्म पर होने वाले लेनदेन की सुरक्षा बढ़ी है। फिनटेक स्टार्टअप्स भी इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। उदाहरण के लिए "रेज़रपे" और "फोनपे" जैसे प्लेटफॉर्म "एआई" का उपयोग करके छोटे व्यवसायों के लिए आसान भुगतान समाधान प्रदान करते हैं। ये स्टार्टअप्स ग्राहक व्यवहार का विश्लेषण करके बैंकों के साथ साझेदारी में नए उत्पाद विकसित कर रहे हैं। एक अन्य स्टार्टअप "क्रेडएवेन्यू" "एआई" का उपयोग करके छोटे और मध्यम उद्यमों (एसएमई) के लिए ऋण स्वीकृति प्रक्रिया को तेज कर रहा है जिससे वित्तीय समावेशन को बढ़ावा मिल रहा है। इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि "एआई" न केवल बड़े बैंकों के लिए बल्कि छोटे खिलाड़ियों और स्टार्टअप्स के लिए भी एक शक्तिशाली उपकरण बन रही है। यह सहयोगी दृष्टिकोण भविष्य में और मजबूत होगा जिससे भारतीय बैंकिंग परिदृश्य और अधिक प्रतिस्पर्धी और नवाचारी बनेगा

चुनौतियां

डेटा गोपनीयता के साथ-साथ "एआई" के पर्यावरणीय प्रभाव पर भी ध्यान देना होगा। "एआई" मॉडल्स को प्रशिक्षित करने के लिए बड़े पैमाने पर ऊर्जा की आवश्यकता होती है जो कार्बन उत्सर्जन को बढ़ा सकती है। भारत जैसे देश में, जहाँ ऊर्जा का बड़ा हिस्सा अभी भी जीवाश्म ईंधन से आता है यह एक गंभीर चिंता का विषय हो सकता है। बैंकों को हरित तकनीकों (ग्रीन "एआई") में निवेश करना चाहिए ताकि यह सुनिश्चित हो कि नवाचार पर्यावरण के लिए हानिकारक न हो।

चुनौतियों का समाधान और भविष्य की दृष्टि

"एआई" के लाभों को पूरी तरह से हासिल करने के लिए भारत को अपनी चुनौतियों पर काबू पाना होगा । डेटा गोपनीयता के मुद्दे को हल करने के लिए बैंकों को एन्क्रिप्शन और सुरक्षित क्लाउड स्टोरेज जैसी तकनीकों में निवेश करना चाहिए । साथ ही "एआई" मॉडल्स को नियमित रूप से ऑडिट करना होगा ताकि पक्षपात या त्रुटियों को दूर किया जा सके । तकनीकी बुनियादी ढांचे की कमी को दूर करने के लिए सरकार को ग्रामीण क्षेत्रों में 5जी नेटवर्क और बिजली आपूर्ति पर ध्यान देना चाहिए । इसके साथ ही बैंक कर्मचारियों और ग्राहकों के लिए डिजिटल साक्षरता कार्यक्रम चलाए जाने चाहिए । फिनटेक स्टार्टअप्स और शैक्षणिक संस्थानों के साथ साझेदारी से "एआई" विशेषज्ञों की एक नई पीढ़ी तैयार की जा सकती है । भविष्य में "एआई" भारतीय बैंकिंग को न केवल तकनीकी रूप से उन्नत बनाएगी बल्कि इसे अधिक समावेशी और ग्राहक-केंद्रित भी बनाएगी । उदाहरण के लिए "एआई"-संचालित माइक्रोफाइनेंस मॉडल ग्रामीण महिलाओं और छोटे किसानों को छोटे ऋण प्रदान कर सकते हैं जिससे उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। साथ ही "एआई" और बिग डेटा का संयोजन बैंकों को बाजार के रुझानों का अनुमान लगाने और नीतियों को तदनुसार समायोजित करने में मदद करेगा ।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता भारतीय बैंकिंग के भविष्य का आधार बनने जा रही है । यह तकनीक न केवल ग्राहक अनुभव को बेहतर बनाएगी बल्कि बैंकों को परिचालन दक्षता सुरक्षा और नवाचार में भी आगे ले जाएगी । ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच वित्तीय खाई को पाटने में "एआई" की भूमिका अभूतपूर्व होगी । हालांकि इसके लिए मजबूत नीतियों तकनीकी निवेश और नैतिक दृष्टिकोण की आवश्यकता है । सरकार आरबीआई बैंक और फिनटेक कंपनियों के संयुक्त प्रयासों से भारत न केवल डिजिटल बैंकिंग में अग्रणी बन सकता है बल्कि वैश्विक वित्तीय मंच पर भी अपनी एक अलग पहचान बना सकता है । "एआई" के साथ भारतीय बैंकिंग का भविष्य न केवल तकनीकी रूप से उन्नत होगा बल्कि यह हर नागरिक के लिए सुलभ और समृद्ध भी होगा । यह एक ऐसा परिदृश्य होगा जहाँ बैंकिंग सिर्फ लेनदेन का माध्यम नहीं बल्कि आर्थिक सशक्तिकरण का एक शक्तिशाली उपकरण होगी ।

गोपाल कृष्ण (उप मंडल प्रमुख)

दामोदर नदी

दामोदर नदी: नाम और पौराणिकता- भारत की नदियाँ केवल जलधाराएँ नहीं होतीं, बल्कि वे सांस्कृतिक, धार्मिक और पौराणिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण होती हैं। गंगा, यमुना, सरस्वती जैसी नदियों की तरह ही **दामोदर नदी** भी एक विशेष स्थान रखती है। यह नदी न केवल अपने भौगोलिक महत्व के लिए जानी जाती है, बल्कि इसके **नाम और पौराणिकता** से भी इसका विशेष महत्व है।

दामोदर नाम की उत्पत्ति- "दामोदर" संस्कृत शब्द है जो दो शब्दों से मिलकर बना है:**'दम'** का अर्थ है 'रस्सी'**'उदर'** का अर्थ है 'पेट' या 'कमर' यह नाम भगवान श्रीकृष्ण से जुड़ा है। एक प्रसिद्ध कथा के अनुसार, जब बालकृष्ण बार-बार माखन चुराते थे, तब उनकी माता यशोदा ने उन्हें रस्सियों से एक ऊखल (ओखली) से बाँध दिया। उस समय उनके पेट में रस्सी बंधी थी, इसलिए उन्हें **'दामोदर'** कहा गया अर्थात "जिसके उदर (कमर) में दम (रस्सी) बंधी हो"। इस नाम के कारण यह नदी भी भगवान श्रीकृष्ण के नाम से जुड़ी हुई मानी जाती है और इसे **एक पवित्र और दिव्य नदी** माना जाता है।

पौराणिक और धार्मिक महत्व- हालाँकि दामोदर नदी के बारे में वेदों या प्रमुख पुराणों में सीधा उल्लेख कम मिलता है, लेकिन इसका नाम श्रीकृष्ण से जुड़ा होने के कारण इसे धार्मिक महत्व प्राप्त हुआ है। यह नदी झारखंड और पश्चिम बंगाल के क्षेत्रों में प्रवाहित होती है, और इन क्षेत्रों में **श्रीमद्भागवत कथा** एवं **कृष्ण लीलाओं** से संबंधित कई लोक कथाएँ प्रचलित हैं। दामोदर नदी के किनारे स्थित कुछ प्राचीन मंदिरों में भी भगवान कृष्ण की उपासना होती है, और नदी को एक *पवित्र पुरुष नदी* के रूप में देखा जाता है।

पुरुष नदी के रूप में पहचान- भारतीय परंपरा में अधिकांश नदियों को **"नदी माता"** के रूप में पूजा जाता है - जैसे गंगा, यमुना, नर्मदा आदि। लेकिन **दामोदर** और **ब्रह्मपुत्र** जैसी कुछ नदियाँ अपवाद स्वरूप **"पुरुष नदी"** मानी जाती हैं। इसकी मुख्य वजह है:इसका नाम पुरुष देवता (श्रीकृष्ण) से जुड़ा होना। इसकी उग्र और तेज धारा, जिससे यह पहले बाढ़ लाकर तबाही मचाया करती थी और इन विनाशकारी गुणों को परंपरागत रूप से "पुरुषत्व" से जोड़ा गया।

नदी का सांस्कृतिक योगदान- दामोदर नदी झारखंड की कोयला खानों और पश्चिम बंगाल की औद्योगिक क्रांति में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा चुकी है। परंतु इसके पीछे छुपी धार्मिक मान्यताएँ और नाम की पौराणिकता भी इस नदी को एक विशिष्ट स्थान देती है। दामोदर नदी सिर्फ एक भौगोलिक जलधारा नहीं है, बल्कि यह भारतीय सांस्कृतिक और धार्मिक चेतना का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसका नाम भगवान श्रीकृष्ण से जुड़ा हुआ है, जो इसे एक दिव्य पहचान देता है। यह नदी उन कुछ गिनी-चुनी नदियों में से है जिन्हें पुरुष रूप में माना गया है। इसके पौराणिक नाम और धार्मिक मान्यताओं ने इस नदी को जनमानस में एक विशिष्ट और श्रद्धेय स्थान प्रदान किया है।

पंकज कुमार (प्रबंधक)

"जाने भी दो यारों"

जाने भी दो यारों---
लोग, जो कहते हैं कहने दो
ऐब ढूंढते हैं तो ढूंढने दो
ये उनकी मर्जी----
उनके कथनों का विश्लेषण कर
खुद को मायूस क्यों करूं ।

उनकी सुन - सुन कर क्यों मैं, आहें भरू
हमने तो ठान लिया है सही मार्ग पर चलने की
फूलों की सेज ही नहीं कांटों पर भी चलने की
चलते - चलते सीख लिया है ।

कड़वी बातों को मुस्कुराकर टालने की
हवा की झोंका भी ना बदल पाएंगे
मेरे राहों को, मेरे इरादों को ।
चलते - चलते मैं यही कहूंगा---
जाने भी दो यारों !!

शंकर बनिक
अधिकारी (सेवानिवृत्त)

सफर

राहें थीं अनजानी सी,
कुछ धूल भरी, कुछ पानी सी।
कभी धूप ने छाया छीनी,
कभी छाँव बनी कहानी सी।
हर मोड़ पे एक किस्सा था,
हर मंज़र में एक सपना था।
कभी हँसी मिली राहों में,
कभी दर्द भी अपना था।
सफर में लोग मिलते गए,
कुछ दिल में रह गए,
कुछ हवा से बातें कर
ख़ामोशी में बह गए।
मंज़िलों का पता ना था,
बस चलते जाना सीखा।
हर थकन में एक राहत थी,
हर रुकावट ने कुछ लिखा।
ये सफर ही तो ज़िंदगी है,
ना जाने कहाँ ले जाए।
मंज़िलें खुद तलाश लेंगी,
बस तू चलते रह पाए ।

गौरभ कुमार (मुख्य प्रबंधक)

सतर्कता पर पर्यवेक्षण और नियंत्रण की भूमिका

सतर्कता का अर्थ होता है जागरूकता, सजगता और अनुशासन की भावना बनाए रखना। यह न केवल व्यक्तिगत स्तर पर बल्कि सामाजिक, प्रशासनिक एवं राष्ट्रीय स्तर पर भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। किसी भी संगठन, संस्था या सरकार के सुचारु संचालन के लिए सतर्कता की भूमिका केंद्रीय होती है। जब सतर्कता के साथ पर्यवेक्षण और नियंत्रण को जोड़ा जाता है, तो यह भ्रष्टाचार, अनियमितता और लापरवाही जैसी समस्याओं पर अंकुश लगाने का प्रभावी माध्यम बन जाता है।

सतर्कता का महत्व - सतर्कता का मुख्य उद्देश्य है - ईमानदारी, पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करना। यह एक नैतिक मूल्य है, जो किसी भी कार्य में अनुशासन और सत्यनिष्ठा की भावना को बनाए रखता है। सरकारी कार्यालयों, सार्वजनिक उपक्रमों, न्यायालयों और अन्य संस्थानों में यह सुनिश्चित करना कि सभी कार्य पारदर्शी ढंग से हों, सतर्कता का ही एक हिस्सा है।

पर्यवेक्षण और नियंत्रण की भूमिका- पर्यवेक्षण का तात्पर्य है किसी प्रणाली, कार्य या व्यक्ति की नियमित निगरानी करना, ताकि गलतियों, धोखाधड़ी या लापरवाही को समय रहते रोका जा सके। वहीं नियंत्रण का अर्थ है - निर्धारित नियमों और प्रक्रियाओं के अनुसार कार्यों का संचालन सुनिश्चित करना। पर्यवेक्षण और नियंत्रण के बिना सतर्कता केवल एक सैद्धांतिक अवधारणा बनकर रह जाती है। सरकारी विभागों में मुख्य सतर्कता अधिकारी **(Chief Vigilance Officer - CVO)** की नियुक्ति इसी उद्देश्य से की जाती है कि वे पर्यवेक्षण करें, शिकायतों की जाँच करें और अनियमितताओं पर नियंत्रण रखें। इसके अतिरिक्त, सीबीआई **(CBI),** सतर्कता आयोग **(Central Vigilance Commission - CVC)** और अन्य एजेंसियाँ भी इसी कार्य में लगी होती हैं।

सतर्कता सप्ताह एवं जागरूकता अभियान - भारत सरकार हर वर्ष "सतर्कता जागरूकता सप्ताह" का आयोजन करती है, जिसमें नागरिकों को ईमानदारी और नैतिक मूल्यों के प्रति जागरूक किया जाता है। यह सप्ताह विभिन्न संगठनों में निबंध प्रतियोगिता, सेमिनार, शपथ ग्रहण और अन्य कार्यक्रमों के माध्यम से मनाया जाता है। सतर्कता केवल किसी संगठन विशेष की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि यह हर नागरिक की नैतिक जिम्मेदारी है। जब प्रत्येक व्यक्ति अपने स्तर पर सतर्क रहेगा, तभी समाज में अनुशासन, पारदर्शिता और जवाबदेही बनी रह सकेगी। पर्यवेक्षण और नियंत्रण के माध्यम से सतर्कता को मजबूती दी जा सकती है और एक भ्रष्टाचार-मुक्त, सशक्त राष्ट्र की नींव रखी जा सकती है।

इस प्रकार, सतर्कता, पर्यवेक्षण और नियंत्रण - ये तीनों मिलकर किसी भी संस्था को मजबूती प्रदान करते हैं। इनका समुचित समन्वय न केवल प्रशासनिक व्यवस्था को सुदृढ़ करता है, बल्कि नागरिकों के बीच विश्वास और सुरक्षा की भावना भी पैदा करता है।

आत्ममंथन

चलो करें अब आत्ममंथन,
भीड़ से हट, अपने भीतर का दर्शन ।
हर शोर के पीछे जो चुप्पी है,
उसमें ही तो सच्ची दुनिया छुपी है ।

मन के आईने में झाँक कर देखो,
क्या सही है, क्या बस दिखावा है, लेखो ।
क्या स्वार्थ की परतों में दबा है कुछ सत्य ?
या बस बनते जा रहे हैं, ढोंग के व्यक्त ?

हर दिन हम दौड़ते हैं मंज़िल की ओर,
पर क्या देखा कभी, किस ओर है भोर ?
क्या खो दिया इस जीवन की दौड़ में ?
क्या पा लिया झूठी मुस्कान की होड़ में ?

आत्ममंथन एक दीपक है,
जो अंधेरे में जलता है ।
अपने ही मन के सवालों से,
हर उत्तर धीरे-धीरे मिलता है ।

सच की लौ में तपो तो सही,
झूठ की परतें भी पिघलेंगी कहीं ।
एक बार ठहरो, खुद को समझो,
फिर देखो जीवन कितना सरल लगे जो ।

चलो करें आज आत्मचिंतन,
बनें फिर से हम, पूरे मन से मानव ।
नियति को फिर नया अर्थ दें,
सत्य, प्रेम और करुणा से जीवन को भर दें ।

अरविन्द कुमार (मुख्य प्रबंधक)

नारी शक्ति

नारी है शक्ति, नारी है ज्ञान,
नारी से ही है सृष्टि की जान ।

कोमलता में छिपी है दृढ़ता,
सहनशीलता में बसी है शक्ति की सत्ता ।

वो माँ बनकर ममता लुटाती,
बेटी बन हर घर को मुस्काती ।

बहन बन भाई का मान बढ़ाए,
पत्नी बन जीवन संवार दिखाए ।

शक्ति की वो सच्ची मूरत है,
हर रूप में सुंदर सूरत है ।

चुप रहकर भी बहुत कुछ कह जाती,
हर दुःख को मुस्कान में छुपा जाती ।

कभी लक्ष्मी, कभी सरस्वती,
कभी दुर्गा बन जाए अचूक शक्ति ।

संघर्षों से लड़ना उसने सीखा,

हर मुश्किल में खुद को निखारा, न फीका ।

नमन उस नारी शक्ति को बारंबार,
जो बदल रही है समय का हर व्यवहार ।

उठो नारी, अब मत झुको,

अपने हक के लिए खुद को पहचानो, खुद को चुनो ।

सोहिनी दत्ता
प्रबंधक एचआरडी

बेटियाँ

घर की इज्जत, घर की दौलत,
घर की रौनक बेटियाँ ।

मुक्त करना ही पड़ेगा वहशियों के पास से
पददलित होती रहेंगी और कब तक बेटियाँ ।

इससे पहले माँ का जेवर कोइ भी गिरवी रखे
तोड़ देती है उठाकर अपनी गुल्लक बेटियाँ ।

वासना लोलुप निगाहें और चुप्पी भीष्म की
कृष्ण को आखिर पुकारेंगी तो कब तक बेटियाँ ।

हाशिये पे डाल दी जाती है बचपन से मगर
रखती है ऊंचा सदा बाबा का मस्तक बेटियाँ ।

प्रदीप कुमार (प्रबंधक) सीबीबी दुर्गापुर

एक फौजी का चिट्ठी

पूज्य पिताजी, सादर प्रणाम,

यह चिट्ठी जब तक आपके पास पहुंचेगी शायद उससे पहले ही मैं घर पहुंच जाऊंगा क्योंकि मेरी छुट्टी मंजूर हो गई है । फिर भी आपको चिट्ठी लिखे बगैर मुझसे रहा नहीं गया। मुझे गर्व है आप पर पिताजी, आप ने ही मुझे आपने कर्तव्य पथ पर चलना सिखाया है । जिस तरह आपने अपना सारा जीवन देश की सेवा और सीमा की सुरक्षा पर चौकन्ने रहते हुए हम सभी भारतवासियों को सुख और अमन चैन की नींद डी है, मैं भी उसी पथ पर चलते हुए अपने को गर्वित महसूस कर रहा हूँ । पिताजी मैं भी अपने बच्चों को यही शिक्षा दूंगा कि अपने वतन की सेवा को सर्वप्रथम रखते हुए कार्य करे । पिताजी आपने हमे शिक्षा दी है कि माता और मातृभूमि दोनों की रक्षा करना हमारा परम कर्तव्य है और इसी कर्तव्य को निभाने का सदैव प्रयास करता रहूंगा ।

पिताजी आपको यहां जानकर खुशी होगी कि हमारे वतन में कुछ घुसपैठियों द्वारा आतंक फैलाने के मंसूबे से हमारे भारत देश में प्रवेश करने की कोशिश कर रहे थे जिसे हमारे बटालियन ने नाकाम कर दिया है । दुश्मनों ने हमपर अंधाधुंध गोलियां चलाई लेकिन हमने भी डटकर उनका मुकाबला किया और उस मुठभेड़ में हमने कई आतंकियों को ढेर कर दिया । जिसके कारण भारत सरकार ने हमें पुरस्कृत करने का फैसला किया है । वैसे तो आप जानते ही हैं कि बॉर्डर पर मौत मंडराते ही रहते है पर आप बिल्कुल चिंता ना करें । यहां का माहौल बताने के लिए मै जल्दी ही घर पहुंच रहा हूं । आगे मांताजी के चरणों में मेरा मेरा शत - शत प्रणाम और अपना ख़्याल रखियेगा ।

आपका बेटा अभिमन्यु ।

मेरी प्रियतमा,

इंतजार की घड़ी अब खत्म होने को है । आपको यह जानकर खुशी होगी कि मेरी छुट्टी की अर्जी मंजूर हो गई है और मैं जल्दी ही वापस आ रहा हूँ । हमने आपके लिए दो खूबसूरत लाल कढ़ाई वाली साड़ियाँ खरीदी हैं । पहली वाली तो आपको बहुत सुन्दर लगेगी । साथ ही यहां का कश्मीरी शॉल भी बहुत विख्यात जिसे मैने सीधे बुनकरों से खरीदी है आशा है आपको यह सब पसंद आएंगी । बच्चों के लिए हमने सेव के बगीचे से एक टोकरी सेव और ढेर सारे अखरोट पैक करवा लिए है बच्चों को सेव बहुत पसंद है । उन दोनों के लिए हमने गर्म कपड़े भी खरीद लिये है । घर के लिए दो गालीचा खरीदा है जो यहां बहुत ही विख्यात है । पिताजी और मम्मी जी के लिए शॉल भी खरीदें है । कश्मीर की वादियां मानों स्वर्ग है । हिंदी मोबाइल बोर्ड बर्फ की चादर से ढकी बॉर्डर पर तैनात हूं । यहां की प्रकृति जितना सुंदर है उतना डरावनी भी है ।

हमारे लिए बिल्कुल चिंता ना करे । मुन्ना ठीक - ठाक स्कूल जा रहा है या नहीं । गुड़िया की नई स्कूल कैसी है । मैं जानता हूं कि आप मां बाबूजी का बहुत ही ख्याल रखती है मुझे उनके लिए चिंता नहीं पर मुझे आपकी चिंता है कि आप सब की सेवा करते - करते खुद को आईने के सामने जाने का भी फुर्सत मिलता है या नहीं । इस बार मैं घर आते ही आपकी सहायता के लिए एक बाई जरूर रख दुंगा चाहे जितना पैसा खर्च हो । अब मेरी तनख्वाह बढ़ गई है । मेरी गैर मौजूदगी में आपने घर परिवार को जिस तरह सम्भाल कर रखा है वो काबिले तारीफ है । आप हमारे घर की लक्ष्मी हो । मैं पास रहूं या ना रहूं पर इस घर को सदैव सम्भाल कर रखना । चलो, आप भी सो जाओ काफी रात हो गई है मुझे कुछ और भी सामान पैक करना बाकी है । आप सभी को ढेर सारा प्यार ।

आपका जीवन साथी----

अभिमन्यु

यह कहानी उन दिनों का है जब मोबाइल फोन का नामोनिशान नहीं था । यहां तक कि हर घर में टेलीफोन भी नहीं था । डाक द्वारा चिट्ठी भेजी जाती थी । इसमें कई दिनों का समय लग जाता था । जिस दिन अभिमन्यु के घर चिट्ठी पहूंची उसी दिन दुर्भाग्य से अभिमन्यु का पार्थिव शरीर भी पहुंचा । सीमा पर घमासान युद्ध में अभिमन्यु शहीद हो गया ।

शंकर बनिक अधिकारी (सेवानिवृत्त)

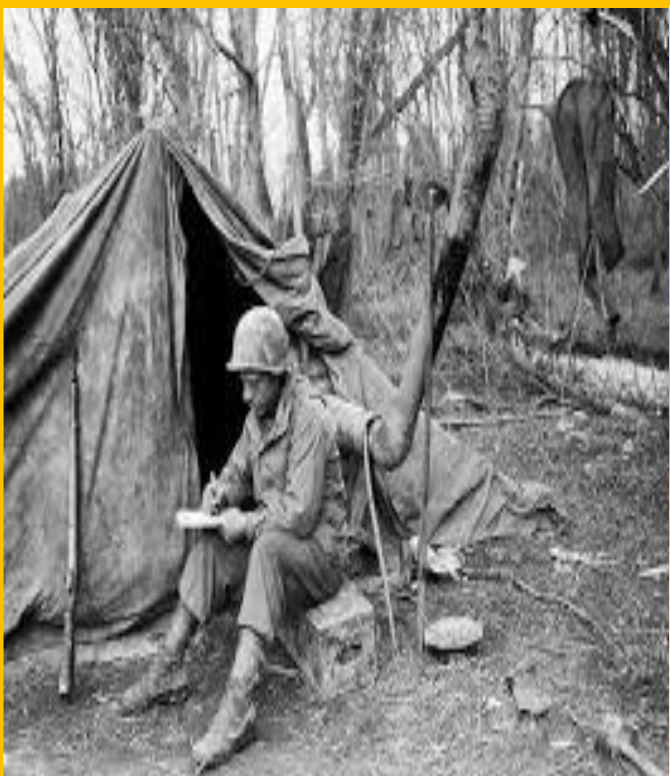

बचपन

सुनो - सुनो बचपन की कहानी,

कविता के जरिए मेरी जुबानी ।
नन्हे कदम संग दौड़ लगाते,

खिलखिलाते और धूम मचाते ।
सूरज,चंदा बन जाते खिलौने प्यारे,

सपने भी बनते मेरे सहारे ।
ना कोई चिंता, ना दुनिया की मार,

चॉकलेट टॉफी से खुश हो जाते हर बार ।
गर्मी की छुट्टी मतलब नानी घर,

अगर ना जाओ तो आ जाती क़हर ।
मौज - मस्ती के साथ कभी-कभी गिर जाते,
हर चोट में नई सीख अपनाते ।
बचपन की यह कथा पुरानी,

बस इतनी सी थी मेरी जुबानी ।

आस्तिका सोनी - पुत्री- अनिल कुमार साह
उप प्रबंधक, पाण्डवेश्वर शाखा

वर्षा आई छम–छम-छम

बादल घिरे गगन के कोने,
बूँदें बरसें कोमल सोने ।

धरती मुस्काए भीग गई है,
हरियाली फिर से जाग गई है ।

नन्ही बूँदें नृत्य करें जब,
पत्तों पर टप-टप राग बजे तब ।

कागज की नावें तैरी जातीं,
बचपन की यादें साथ में लातीं ।

खेतों में फिर जीवन आया,
सूखी माटी ने रस पाया।

किसान झूमे, हर्ष जताए,
मेघों को मन से धन्यवाद कह पाए ।

इंद्रधनुष भी हँसता जाता,
रंग-बिरंगे सपने लाता ।

वर्षा केवल जल की धारा,
जीवन का ये मधुर सहारा ।

यश्वी स्वरा
पुत्री आनंद बिहारी साव

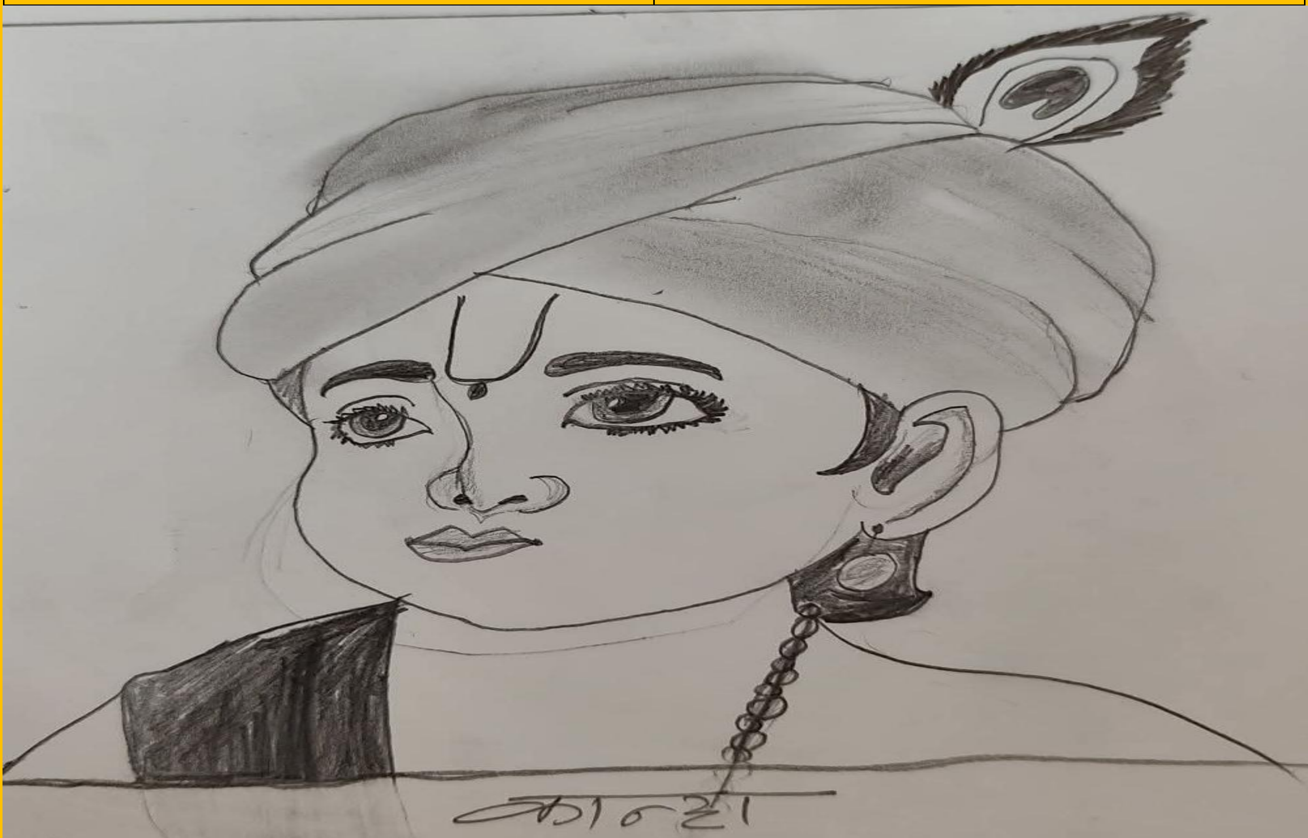

खूबसूरत सफर

जिंदगी एक खूबसूरत सफर है,
इसमें खुशियां भी है और गम भी
इस सफर में दिन का उजाला है,
तो रात का अंधेरा भी ।

कभी पेट भर खाना मिलता है,
तो कभी भुखा रहना पड़ता है ।
कभी हंसते-हंसते आंखों में आंसू आ जाते हैं
तो कभी रोते-रोते आंसू भी कम पर जाते हैं ।

जिंदगी के इस खूबसूरत सफर में
कभी बेगाने अपनें हो जाते हैं ।
तो कभी अपने ही बेगाने बन जाते हैं
जिंदगी के खूबसूरत सफर है ।

हर रोज हर पल,
कुछ नये - नये डगर मिलते जाते हैं,
कभी उजड़ा हुआ चमन
तो कभी फूलों सी बहार छा जाती है ।

यही है जिंदगी की खूबसूरत सफर
यही है जिंदगी का मुकम्मल !!

शंकर बनिक अधिकारी (सेवानिवृत्त)

माँ

माँ हमें शक्ति दो,
अलख जगाओ भक्ति का माँ
विसंगति से दूर करो ।
सब पर कृपा दृष्टि रखना,
मोह माया से दूर करो
माँ हमें शक्ति दो ।

चारों ओर संग्राम छिड़ा है,
हर घर में दानव खड़ा है
अहंकार की कुंजी लेकर
क्षण भंगुर करने को चला है ।
माँ तुरंत अलख ज्योति जगा दो,
माँ हमें शक्ति दो ।

हर घर में कोहराम मचा है,
मानव मानव त्रास रहा है
कब होगी मुक्ति हमें बता दो,
मानव की नेत्र ज्योति जगा दो,
माँ हमें शक्ति दो ।

अपनी दिव्य ज्योति से माँ,
प्रेम संसार को तुम बसा दो ।
अपनी ज्वाला से माँ,
हर घर के दानव को जला दो,
मानव की नेत्र ज्योति जगा दो,
माँ हमें शक्ति दो ।
माँ हमें शक्ति दो ।

प्रदीप कुमार (प्रबंधक) सीबीबी दुर्गापुर

मंडल की गतिविधियाँ

श्री संजीव कुमार अंचल प्रमुख दुर्गापुर एवं श्री दीपक आचार्य मंडल प्रमुख दुर्गापुर द्वारा पुनर्निर्मित शाखा कार्यालय भिरीन्गी का उद्घाटन करते हुए ।

सीएसआर कार्यक्रम के तहत श्री राजेश कुमार प्रमाणिक उप अंचल प्रमुख एवं श्री दीपक आचार्य मंडल प्रमुख दुर्गापुर तथा श्री अतानु सिन्हा मुख्य प्रबंधक एवं मंडल सचीव (एआईपीएनबीओए) द्वारा एडीडीए यंग एसोसिएशन के जरूरतमंद बच्चों को कंप्यूटर कीट प्रदान करते हुए ।

अंचल प्रमुख दुर्गापुर श्री संजीव कुमार एवं मंडल प्रमुख श्री दीपक आचार्य द्वारा दुर्गापुर मंडल की 47वी शाखा कुल्टी का शुभारंभ करते हुए । अन्य सदस्यों में उपस्थित थे उप मंडल प्रमुख श्री गोपाल कृषण, मुख्य प्रबंधक श्री अरविन्द कुमार, श्री आलोक कुमार वरिष्ठ प्रबंधक एवं शाखा प्रभारी श्री रंजीत कुमार उपस्थित थे ।

श्री सुमन्त कुमार पूर्व अंचल प्रमुख दुर्गापुर एवं श्री दीपक आचार्य मंडल प्रमुख दुर्गापुर द्वारा पुनर्निर्मित शाखा कार्यालय चिंचुडीया का उद्घाटन करते हुए ।

pnb
किसान
बचत खाता
हरित
समृद्धि
• विशेष किसान डेबिट कार्ड
• व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा कवरेज
• कृषि/शिक्षा/कार एवं दो पहिया/गृह ऋणों पर प्रोसेसिंग/अग्रिम शुल्क एवं डॉक्यूमेंटेशन शुल्क की छूट
• असीमित परामर्श और विज़िट्स के साथ मुफ्त प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल सेवाएँ
CARDHOLDER NAME
RuPay
SELECT
शर्तें लागू

प्रधानमंत्री फॉर्मलाइजेशन ऑफ माइक्रो फूड प्रोसेसिंग एंटरप्राइजेज (PMFME)

आत्मनिर्भर भारत अभियान पैकेज के अधीन खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय (MOFPI) द्वारा शुरू की गई प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उद्यमों का औपचारिकीकरण (PMFME) योजना को खास तौर पर उपकरण, क्षमता निर्माण और आपूर्ति कड़ी दक्षता में सुधार हेतु वित्तीय सहायता के जरिये सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उद्यमों के औपचारिकीकरण का समर्थन करके उनकी प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाने के लिए तैयार किया गया है। इसका मुख्य उद्देश्य है विकास को बढ़ावा देना, गुणवत्ता में सुधार लाना और छोटी खाद्य प्रसंस्करण इकाइयों को बाजार तक पहुंचना।

प्रमुख विशेषताएं :

- @35% पात्र परियोजना लागत के 35% पर ऋण-सम्बद्ध पूंजी अनुदान।
- सूक्ष्म इकाइयों के विपणन और ब्रांडिंग के लिए सहयोग।
- एसएचजी, एफपीओ और उत्पादक सहकारी समितियों को सामान्य बुनियादी ढाँचे के लिए सहयोग और शुरुआती समर्थन।
- उद्यमों की क्षमता में वृद्धि और श्रमिकों के कौशल विकास के लिए क्षमता निर्माण और प्रशिक्षण सम्बन्धी सहायता प्रदान।

हमें फॉलो करें : www.pnbindia.in | टोल फ्री नम्बर 1800-1800 & 1800-2021 | 1800 180 8888 पर मिस्ड कॉल दें

पंजाब नैशनल बैंक ...भरोसे का प्रतीक ! punjab national bank ...the name you can BANK upon !